AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR), 3.125 (IIFS) & 3.8(SJIF)
Vol (3), Issue (2), April-June 2026 *ISSN: 3048-7951*

स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त में निहित तत्वों का अध्ययन

संतोष कुमार सिंह[1] ; डॉ० योगेश कुमार[2]

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20453516
Review: 01/05/2026 **Acceptance: 04/05/2026** **Publication: 30/05/2026**

शोध सार

यह शोधपत्र स्वामी विवेकानन्द के नव्य (व्यावहारिक) वेदान्त के प्रमुख सिद्धान्तों और उनकी समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। इसमें बताया गया है कि विवेकानन्द ने आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त को आधुनिक, सरल तथा व्यावहारिक रूप प्रदान किया। उनके अनुसार वेदान्त केवल दार्शनिक चिंतन नहीं, बल्कि मानव सेवा, आत्म-विकास और समाज कल्याण का मार्ग है।

मूल शब्द: आध्यात्म, वेदान्त, आत्मा, परामात्मा, कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, राजयोग, व्यवहारिक वेदान्त।

प्रस्तावना:

स्वामी विवेकानन्द जी भारत के ज्ञान रत्न भण्डार, वेदों और उपनिषदों के रहस्योदेयक्ता और भाष्यकार के रूप में मान्य है। स्वामी जी का जीवन में वेदान्त दर्शन नव्य वेदान्त की स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती है। वे वेदान्त दर्शन के अनुयायी थे और वेदान्त को सर्वोच्च दर्शन एवं सर्वोच्च धर्म मानते थे। वे अद्वैत वेदान्त के पक्के समर्थक थे। वे द्वैत विशिष्ट द्वैत तथा अद्वैत में कोई अन्तर नहीं थे वे सभी भारतीय दार्शनिकों सम्प्रदायों को वेदान्त दर्शन के अन्तर्गत मानते है। उन्होंने वेदान्त की विशेषता के सम्बन्ध में लिखा है कि एकम सदविपा बहुधा वदन्ति, उतिष्ठत, जागृत, प्राप्वर्रानिन्वबोधात् सम पश्यन हि सर्वत्र, सम विस्थितमीश्वरम नहि नस्त्यात्मनं ततो याति परांगति, भिन्नता में एकता, द्वैतवाद की अपेक्षा अद्वैतवाद का समर्थन, आत्म विश्वास की उन्नति का कारण द्वैतभावना वादी अविद्या आदि। सृष्टि के सम्बन्ध में उनका कहना है कि सृष्टि के सुत्रपात के समय आकाश अत्यक्त और स्थिर रहता है। वाद में आदि शक्ति का प्रभाव आकाश पर पड़ता है। परिणामतः वह क्रियाशीलता होने लगता है क्रियाशील होने पर मनुष्य पेड़-पौधे नक्षत्र और पशु आदि का जन्म होता है। ईश्वर को साकार एवं निराकार दोनों रूपों में मानते है तथा ॐ का ब्रहम मानते है।

स्वामी जी के अनुसार मानव सेवा और ईश्वर पूजा, मनुष्यत्व और धर्म, सत्य निष्ठता और आध्यात्मिकता में कोई भेद नहीं है। उन्होंने ब्रहम की प्राप्ति के लिए कर्मयोग, भक्तियोग, राजयोग तथा ज्ञानयोग को प्रमुख माना है। धर्म के सम्बन्ध में उनका कहना है कि धर्म वह तथ्य है जिससे पशु मनुष्य तक और मनुष्य परमात्मा तक उठ सकता है। प्रत्येक जीव की भलाई करना ही धर्म है। पुनर्जन्म के सम्बन्ध में उनका विचार है कि वर्तमान अस्तित्व को समझने के लिए यह

[1]शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, (उ०प्र०), भारत।
[2]शोध निर्देशक, सीनियर प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह, महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ०प्र०), संबद्ध: वीर बहादुर सिंह (पूर्वांचल) विश्वविद्यालय, जौनपुर, (उ०प्र०), भारत।

आवश्यक हो जाता है कि उसके अतीत एवं भविष्य पर विचार किया जाये। एकेश्वरवाद में विश्वास रखते हुए स्वामी जी का कहना है कि सभी देवता एक ही परमेश्वर के रूप हैं उन्होंने प्राचीन वेदान्त दर्शन पर नव्य वेदान्त दर्शन का रूप दिया। स्वामी जी वेदान्त एवं विज्ञान दोनों को समान सिद्धान्त को मानते है। वे प्रेम सत्य एवं ईश्वर को एक ही मानते है। स्वर्ग एवं नरक के सम्बन्ध में उनका मानना था कि कहीं स्वर्ग है तो कहीं नरक है भी ईश्वर जगत और माया के विषय में कहते हैं कि ब्रहम जगत का कारण है और जगत इसका कारण है। ईश्वर की बीज शक्ति का नाम माया है। माया परमेश्वर की अव्यक्ति शक्ति हैं माया सत्य का नाम माया है। माया परमेश्वर की अव्यक्त शक्ति है माया सत भी नहीं हैं असत् भी नहीं वह केवल अद्भुत एवं अनिर्वचनीय है। आत्मा अजर और अमर है तथा वह पूर्ण निरपेक्ष होती है जब आत्मपूर्ण व निरपेक्ष हो जाती है तब वह ब्रहम के साथ एक हो जाती है तथा ईश्वर को अपने स्वरूप की पूर्णता सत्यता और सत्ता के रूप परमसत् परमचित, परमानन्द के रूप प्रत्यक्ष करती है।

स्वामी जी का नव्य या व्यावहारिक वेदान्त आदि शंकराचार्य के अद्धैत वेदान्त का आधुनिक, सरल और व्यावहारिक रूप हैं, जो 'ब्रहम सत्य, जगत सत्य (माया नहीं) और नर में नारायण पर जोर देता है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार चेतना को अपने चरम की अनुभति पाने का मार्ग है- योग उनकी मान्यता में योग के द्वारा अमरत्व की अनुभूति सम्भव है यह 'साधना' का मार्ग है और 'मिलन' (आत्मा का परमात्मा से) का मार्ग है। इसके अन्तर्गत ऐसे अनुशासन साधना प्रक्रियाएं में सम्मिलित है, जिनके द्वारा मिलन की अनुभूति सम्भव होती है। इस तरह योग साध भी है और साध्य भी। उनका मानना है कि योग के विविध अनुशासन, ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग और हठयोग पृथक-पृथक रूप से या फिर समन्वित रूप से मोक्षानुभूति के मार्ग है। इनका संक्षिप्त परिचय निम्नवत हैः-

(1) **ज्ञानयोग-** इस अनुभूति पर आधृत है कि बन्धन का मूल कारण अज्ञान है। सत्- इस अनुभूति पर आधृत है कि बन्धन का मूल कारण अज्ञान है। सत्-असत् के भेद को न समझ पाना ही अज्ञान है और सत्-असत् के भेद को समझ लेना 'आत्मज्ञान' या ब्रहमज्ञान है। इसकी प्राप्ति हेतु अध्ययन तथा गुरू से सीखी हुई बातों में निहित वास्तविकता को अनुभूत करना अनिवार्य है। इसके लिए चिन्तन-मनन और निदिध्यासन की प्रक्रियाओं का अवलम्बन ग्रहण किया जाता है। ज्ञानयोग निवृत्ति का मार्ग है, इसका अर्थ है स्वार्थमूलक एवं शरीर आधृत सभी इच्छाओं का त्याग एवं मन, शरीर तथा इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण। इस त्याग में ज्ञान प्राप्ति की उच्च स्तरीय आकांक्षा निहित होती है। इस वैराग्य की प्राप्ति के उपरान्त ध्यान द्वारा साधक को परमतत्व की अनुभूति हो जाती है।

(2) **भक्तियोग-** भक्ति मार्ग साधारण भावनाओं को सघनतम व प्रबल संवेगात्मक बनाकर 'ईश्वर' की प्राप्ति का मार्ग बन जाता है। भक्ति मार्ग शुद्ध प्रेम का मार्ग है। क्यौंकि इसमें सर्वप्रेम निहित है। प्रत्येक वस्तु तथा तत्व के लिए प्रेम निहित है क्योंकि यह सब कुछ के एक मात्र आधार ईश्वर के प्रति प्रेम है। यदि प्रेम को सीमा तक व्यापक व सघन बनाया जा सके कि सर्वस्व उनमें समाष्टि हो जाये, सब कुछ के लिए प्रेम जागृत हो जाये, यही ईश्वर भक्ति है। स्वामी जी ने ईश्वरीय प्रेम तक पहुचनें के क्रमिक सोपान बताये हैं इनमें प्रथम पूजा, प्रार्थना या आराधना आदि का स्तर है। इस प्रकार की ब्रहमभक्ति का सर्वविधिक प्रचलित व स्पष्ट रूप मूर्तिपूजा है। द्वितीय

स्तर के अन्तर्गत ईश्वर की प्रार्थना, सुमिरन, आदि जीवन के अंश बन जाते हैं। तृतीय स्तर पर बाहम प्रार्थना के स्थान पर शान्त-आंतरिक प्रार्थना का आविर्भाव हो जाता है, इसकी सम्पूर्ण भावनात्मक शक्ति ईश्वरीय अनुभूति से परिपूर्ण हो जाती है। चतुर्थ अन्तिम स्तर में भक्त और भगवान् का अन्तर समाप्त हो जाता है। भक्त ईश्वर में लीन हो जाता है। भक्ति मार्ग का परम् लक्ष्य यही है।

(3) **कर्मयोग-** स्वामी जी के शब्दों में 'स्वार्थ' से ऊपर उठकर कुछ शास्त्र सम्मत एवं कुछ नैतिक दृष्टि से शुभ कर्मो को करना ही कर्म मार्ग है। तात्पर्य यह है कि कर्ममार्गी का कम स्वाथ से संचालित नहीं होता, वह किसी इच्छित वस्तु की प्राप्ति के लिए कर्म नहीं करता बल्कि उसके कर्मो की मूल प्रेरणा अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है। अतः वह सामान्य वस्तुओं के भोग के लिए कर्म नहीं करता, वह साधारण कर्म तथा कर्ममार्गी के कर्म में अन्तर है। स्वामी जी का कहना है कि कर्मयोगी का जीवन मन्त्र है-'मैं नहीं वरन् तू' और आत्मोत्सर्ग का कोई परिमाण उसके लिए अधिक नहीं होता सतत् स्वार्थ रहित कर्म करते रहने से निष्कामला उसका सहज स्वाभाव बन जाता है और वह 'स्व' के बन्धन से ऊपर उठ जाता है। इसी की व्यापकता में उसे सब कुछ के एक रूप होने की अनुभूमि होने लगती है, वह 'स्व' तथा 'अन्य' के भेद से बहुत ऊपर उठ जाता है। यही चेतना के विकास की परमस्थिति है।

(4) **राजयोग-** यह मानसिक व शारीरिक अनुशासन का योग है। इसके अनुसार बन्धन का मूल कारण यही है कि मन तथा शरीर में निहित सामान्य प्रवा ियाँ हमें विचलित करती रहती है। इससे शक्ति का अपव्यय हो जाता है। जिसके फलस्वरूप आत्मा भी शिथिल हो जाती है। शक्ति के इस अपव्यय को रोकना अनिवार्य है, क्योंकि संचित शक्ति को ही ईश्वर की ओर प्रेरित किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत शरीर व मन के नियन्त्रण के लिए सशक्त अनुशासित यौगिक क्रियाएँ निहित है। इन क्रियाओं की अन्तिम अवस्था ध्यान है। इसी के द्वारा चरम लक्ष्य की प्राप्ति होती है। यह योग शारीरिक व मानसिक रूप से शसक्त लोगों के लिए है।

(5) **समन्वित मार्ग-** विवेकानन्द के मत में साधक अपनी मनःस्थिति, मोनवृत्ति तथा क्षमता के अनुरूप कोई भी मार्ग चुनकर उसमें पूर्णनिष्ठा के अग्रसर होकर चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। परन्तु ध्यान रखने योग्य तथ्य यह है कि ये मार्ग एक दूसरे से सर्वथा पृथक नहीं है, केवल भिन्न-भिन्न लोगों में भिन्न-भिन्न मनोवृत्ति होने के कारण अलग-अलग नाम दिये गये है।

स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा प्रस्तुत वेदान्त, जिसे अक्सर नव्य-वेदान्त या व्यावहारिक वेदान्त कहा जाता है, अद्वैत वेदान्त का एक आधुनिक और क्रियात्मक रूप है। यह केवल गुफाओं या हिमालय में ध्यान करने का दर्शन नहीं, बल्कि दैनिक जीवन कर्म और मानवता की सेवा में निहित दर्शन है।

स्वामी जी सम्पूर्ण विश्व में कोई भी ऐसा राष्ट्र नहीं है जहाँ भारत सदृश मनीषियों की सतत् श्रृंखला विद्यमान नही हो तथा जिन्होंने अपने ज्ञान तथा सम्यक् आचरण से समस्त जगत को आलेकित किया हो, भारत में ज्ञान के उद्‌भव से ही यहाँ के नुलियों एवं महर्षियों ने ब्रहमड सृष्टि एवं सृष्टा, आत्मा एवं परमात्मा, जीव एवं जगत् ज्ञान एवं अज्ञान सत् एवं असत् ज्ञान तथा मनुष्य के कारणीय एवं अंकरणीय कर्मो का तार्किक विवेचना

करना प्रारम्भ कर दिया था। तत्पश्चात् अन्तिम सत्य ईश्वर को जानने का प्रयास किया जाने। इसके प्रयोजनार्थ आध्यात्मिक चिन्तन को साधन बनाया गया। जिसे बाद में 'दर्शन' की संज्ञा दी गयी। दर्शन किसी वस्तु को विभिन्न तरह से अवलोकन नजरिया प्रदान करता है। यह एक ऐसी विचारधारा है जो सत्यान्वेषण को अंजाम देती है।

भारत में आज भी उसे अन्तिम सत्य की खोज करने वाले शास्त्र के जैसा जाना जाता है जैसे कि उपनिषद में वर्णित है-"दृश्यते अनेन इति अर्थात् जिससे देखा जाय अथवा सत्य का दर्शन किया जाय वह दर्शन है। दर्शन वह ज्ञान है जो तत्व दर्शन कराता है। ज्ञान के लिए प्रेम, सत्य की खोज, चिन्तन की कला, जीवन की व्याख्या एवं समस्याओं पर विचार करने का तार्किक ढंग प्रस्तुत करता है। निष्कर्षतः दर्शन वस्तु प्रकृति, मनुष्य आदि को देखने का एक दृष्टिकोण है। दर्शन जीवन के प्रति एक ऐसी धारणा है। जो प्रत्येक व्यक्ति में होती है और जिसके कारण प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से भिन्न दिखाई देता है जब भी मनुष्य के सामने कोई भी घटना घटित होती है या समस्या आती है या वह संदेह या प्रश्न के बारे में चिन्तन करने लगता है तो इस चिन्तन में उसके पूर्व अनुभव उसकी सहायता करते है और उन अनुभवों के द्वारा उनके मन में उस घटना समस्या प्रश्न करती है। स्वामी जी के वेदान्त में निहित मुख्य सिद्धान्तों का अध्ययन निम्न बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता हैः

1- **व्यावहारिक वेदान्त-** स्वामी जी का कहना था कि यदि वेदान्त के सिद्धान्त अव्यावहारिक है, तो वे केवल बौद्धिक कसरत है। उन्होंने वेदान्त को प्रयोगशाला से बाहर निकालकर जीवन के हर दर्शन-शिक्षा समाज और कर्म में लागू करने पर बल दिया।

   1.1. **ईश्वर की सर्वव्यापकता-** वेदान्त सिखाता है कि ईश्वर न केवल इस ब्रह्मण्ड का नियामक हैश्व बल्कि भौतिक कारण भी है, अर्थात कण-कण में ईश्वर है।

   1.2. **सेवा की पूजा-** उन्होने 'नर'सेवा ही 'नारायण सेवा' का मन्त्र दिया जिसका अर्थ है मनुष्यों की सेवा करना ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

2. **नव्य वेदान्तः** यह अद्वैत दर्शन को आधुनिक विज्ञान, तर्क और पश्चिमी विचारधाराओं (जैसे पारलौकिकता) के अनुसार प्रस्तुत करता है।

3. **विवेक और अनुभव-** विवेकानन्द जी ने धर्म में केवल अंधविश्वास की जगह 'प्रत्यक्ष अनुभव और तर्क को महत्त्व दिया।

4. **विज्ञान के साथ समन्वय-** उन्होंने वेदान्त और विज्ञान के समन्वय की वकालत की जहॉं वेदान्त आध्यात्मिक विकास और विज्ञान भौतिक विकास का मार्ग की ओर उन्मुख करता तथा समन्वय की शिक्षा के प्रति समर्पण करता है।

5. **आत्मविष्वास और आत्म - सशक्तिकरण** - वेदान्त का प्रमुख मूल सन्देश है कि हर आत्मा परमात्मा का ही अंश है।

6. **निर्भरता का अन्तः** -स्वामी जी के अनुसार 'कमजोर होना सबसे बड़ा पाप है। वेदान्त मनुष्य को अपनी अन्तनिहिंत शक्तियों को पहचानने और आत्मनिर्भर एवं निर्भीक बनने की शिक्षा देता है।

7. **नैतिकता-** उनके नैतिक सिद्धान्त निस्वार्थ सेवा कल्याण, करूणा और सत्य पर आधरित है।

8. **सार्वभौमिक धर्मः** - स्वामी जी के वेदान्त में सभी धर्मों के प्रति सम्मान है। उनका मानना था कि सभी मत-मतांतर एक ही परमसत्य (ब्रहम) तक पहँुचने के विभिन्न मार्ग है। यह धार्मिक कट्टरता के बजाय धार्मिक सहिष्णुता और एकता को बढ़ावा देता है तथा अनेकता में एकता की ओर अग्रसर करता है।

9. **आत्मा और माया-** वेदान्त के अनुसार, यह जगत 'सापेक्ष सथ्य' है, जिसे माया कहा गया है।

    9.1. ज्ञान के साथ कर्म- माया के अंधकार से निकलने के लिए ज्ञान (आत्मज्ञान) और कर्म (निःस्वार्थ कार्य) दोनों का संयोजन आवश्यक है।

    9.2. ब्रहम की एकता- सम्पूर्ण जगत एक ही ब्रहम की अभिव्यक्ति है। विविधता में एकता देखना और सभी में एक ही आत्मा का अनुभव करना ही सत्य है।

    9.3. जीव ही शिव- मनुष्य की सेवा (विशेषकर दरिद्र नारायण को) ही ईश्वर की सच्ची पूजा है। निःस्वार्थ सेवा से हृदय शुद्ध होता है।

स्वामी विवेकानन्द का वेदान्त मनुष्य को आत्म-ज्ञान के माध्यम से शक्ति प्रदान करता है और उसे मानवता के कल्याण के लिए कर्म करने के लिए प्रेरित करता है, जो आज के समय में भी अत्यन्त प्रांसगिक है। क्या आप विवेकानन्द के व्यावहारिक वेदान्त या माया की अवधारणा पर और गहराई से जानना चाहते हैं? स्वामी जी ने वेदान्त-दर्शन की व्याख्या आधुनिक परिपेक्ष्य में की तथा निराशा एवं कुण्डा के दल-दल में फंसी हुई भारतीय जनता को जीवन का नया पथ दिखाया स्वामी का वेदों और उपनिषदों पर अटूट विश्वास था। उन्होंने पूरे विश्व में वेदान्त-दर्शन को सर्वजमीन सार्वभौमिक दर्शन के रूप में प्रचारित-प्रसारित किया। स्वामी विवेकानन्द के नव्य वेदान्त दर्शन में आधुनिक वैज्ञानिक खोजों तथा समकालीन विचारों को स्थान मिला, स्वामी जी का दृढ़ विश्वास था कि देश की भौतिक उन्नति एवं सामान्य जन की समृद्धि उतना ही आवश्यक है जितना व्यक्ति और समाज की आध्यात्मिक उन्नति विवेकानन्द का सम्पूर्ण दर्शन गरीबों के अभिशाप में डूबी भारतीय जनता के कल्याण की कामना है। यह प्रायः कहा जाता है कि -"रोटी का प्रश्न हल किये बिना भूखे मनुष्य धार्मिक नहीं बनाये जा सकते। इसलिए रोटी का प्रश्न हल करने का नया मार्ग बताना सबसे मुख्य और सबसे पहला कर्तव्य है।"

स्वामी जी के अनुसार मनुष्य के जीवन का अन्तिम उद्देश्य आत्मानुभूति है। वस्तुतः वे आत्मानुभूति, मुक्ति और ईश्वर प्राप्ति को समानार्थी मानते थे। स्वामी जी मानते थे कि सभी मनुष्यों में ईश्वर का निवास है। अतः मानव सेवा सबसे बड़ा धर्म है। मनुष्य को मन, वचन और कर्म से शुद्ध होकर अर्थोपार्जन करना चाहिए, दीन-हीनों की सेवा करती चाहिए और योग मार्ग द्वारा आत्मानुभूति प्राप्त करते हुए मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए।

हेण्डरसन के अनुसार, ‘‘सृष्टि और इसमें मनुष्य के स्थान के सांगोपांग एवं व्यवस्थित रूप से व्यक्त करने का प्रयास ही दर्शन है।’’

मानव जीवन एक जटिल प्रक्रिया है। प्रारम्भ में मनुष्य की मात्र एक ही समस्या थी कि जीवन की रक्षा कैसे की जाये? वास्तव में मानव जीवन जटिल होता गया तथा उसके सामने विभिन्न प्रकार की समस्या में आने लगी। समय-समय पर इन समस्याओं में निहित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए शिक्षा द्वारा प्रयत्न किया जाता है। शिक्षा व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। जिससे मनुष्य को यर्थाथ का ज्ञानबोध होता है। जीवन जगत के प्रति उसके व्यवहार तथा चिन्तन में निरन्तर परिवर्तन परिमार्जन होता रहा है। अतः कह सकते है कि जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है। इस परिप्रेक्ष्य में स्वामी दयानन्द सरस्वती कि निम्न मीमांसा यथोचित प्रतीत होती है।

‘‘जिससे मनुष्य विधा आदि गुणों की प्राप्ति और अविधा के दोष को छोड़कर सदा आनन्दित हो सके, वह शिक्षा है’’

भारत दर्शन के क्षेत्र में संसार में हमेशा अग्रणी रहा है इस विषय क्षेत्र में भिन्न-भिन्न विद्वानों ने समायानुसार समाज की आवश्यकताओं एवं बदलते वातावरण के कारण अनेक दार्शनिक के दृष्टि को प्रदान किये। जिसमें शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त दर्शन कपिल का साख्य दर्शन, पतंजलि का योग दर्शन, जैमिनि का मीमांसा दर्शन, महर्षि व्यास का गीता दर्शन, रामानुजाचार्य का भक्ति दर्शन, महवीर स्वामी का जैन दर्शन, महात्मा बुद्ध का बौद्ध दर्शन, महर्षि का सर्वागदर्शन प्रमुख है। ये सभी दार्शनिक विचारधाराअें ने आध्यात्मिकता व अवलम्बन लेकर तत्कालीन समाज की दशा और दिशा को एक नई मार्ग प्रदान किया। जिस पर आरूढ़ होकर समाज विकास की असीम ऊँचाई को स्पर्श कर सके। लेकिन समय के अनुरूप परिवर्तित आयामों के कारण समाज को निवर्तमान समय में सम्यक् मार्ग दिखलाने में उपरोक्त दर्शन कुछ कम प्रतीत होने लगे तो ऐसी परिस्थिति में भारत में ही एक ऐसे युवक प्रेरणा स्रोत, उच्च कोटि के मनीषी युग निर्माता तथा विश्व मंच पर भारत की अनोखी छाप अंकित करने वाले महान पुरूष का पदार्पण हुआ जिसे केवल भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व स्वामी विवेकानन्द के नाम से जानता है। इन्होंने भारतीय दर्शन के महान युद्धा आदिगुरू शंकराचार्य के द्वारा प्रतिपादित अद्वैत वेदान्त को वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया जिसे अन्य लोग ‘नव्य वेदान्त’ के नाम से जानते है। स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित नव्य वेदान्त इस भौतिकवादी युग के लिए एक प्रेरणा प्रदायक स्रोत है। इसमें आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का अनोखा समावेश है। शंकराचार्य प्रतिपादित अद्वैत वेदान्त का परिमार्जन आधुनिक काल के सन्दर्भ में किया तथा उसकी प्रांसगिकता कायम रह सके। आदि गुरू शंकराचार्य

प्रणीत 'ब्रह्म, सत्यं जगत् मिथ्या' का परिमार्जन करके यह तर्क दिया कि जिस प्रकार ब्रह्म सत्य है उसी प्रकार ब्रह्म द्वारा विरचित यह जगत् भी सत्य है। क्योंकि ब्रह्म ही इस जगत का सारतत्व है। सत्य से असत्य की उत्पत्ति कैसे हो सकती है? उन्होने मुनष्य का शरीर मन तथा आत्मा का योग माना। नव्य वेदान्त के अन्तर्गत उन्होंने यह विचार दिया कि जब तक आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान नहीं लेती तब तक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती रहती है। जब आत्मा का परमात्मा से साक्षात्कार हो जाता है तब मनुष्य को जीवन से मुक्ति मिल जाती है तथा मनुष्य को आवागमन से मुक्ति मिल जाती है। अर्थात् ब्रह्म मकड़ी की तरह ब्रह्माण्ड का निर्माणकर्ता तथा उपादान कारण भी है।

स्वामी जी अहिंसा को सर्वश्रेष्ठ मानते है पर हिंसा को सर्वथा त्याज्य नही। गृहस्थ को अपने शत्रु के सामने दृढ़ होना चाहिए और गुरू और बन्धुजनों के समक्ष नम्र। यदि वह उनके समक्ष वीरता नहीं दिखाता है तो यह अपने कर्त्तव्य की अवहेलना करता है किन्तु अपने बन्धु-बान्धव आत्मीय स्वजन एवं गुरू के निकट उसे गौर के समान शान्त और निरीह भाव अवलम्बन करना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार, अहिंसा की कसौटी है-ईर्ष्या का अभाव। स्वामी जी के अनुसार, "त्याग के बिना कोई सिद्धि सम्भव नहीं है। त्याग मानवीय चेतना का पवित्रतम सर्वोत्तम साध्य है।" स्वामी जी ने यह बताया कि मानव की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। उससे मुँह मोड़ना धर्म नहीं है। वे कहते थे अगर तुम्हे भगवान की सेवा करनी है तो मानव की सेवा करो। वह भगवान ही रोगी मनुष्य, दरिद्र मनुष्य और सब प्रकार के मनुष्यों के रूप में तुम्हारे सामने खड़ा है। स्वामी जी के अनुसार, 'तुम्हे सिखाया गया है कि अतिथि देवों भव, मातृ देवो भव, पितृ देवो भव पर अब मैं तुमसे कहता हूँ दरिद्र देवोभव।"

विवेकानन्द कहते है कि "विश्व में सन्यासी क्यों जन्म लेते हैं, औरो के निमित्त अपना जीवन उपसर्ग करने, जीव के आकाश भेदी क्रन्दन को दूर करने, विधवा के आँसू पोछने, पुत्र-वियोग से पीड़ित अबलाओ के मन को शान्ति देने, सर्वसाधारण को जीवन संग्राम के लिए तैयार करने, शास्त्र के उपदेशों को फैलाकर सबका ऐहिक ओर परमार्थिक मंगल करने और ज्ञानलोक से सबके अन्दर जो ब्रह्मसिंह सुप्त है उसे जागृत करने"। विवेकानन्द भारत में व्याप्त सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध लगातार संघर्ष करते रहे। वे चाण्डाल में ईश्वर का निवास महसूस करते थे। उन्हीं के शब्दों में "यदि मैं अत्यन्त नीच चाण्डाल होता तो मुझे और भी आनन्द आता, क्योंकि मैं उन महागुरू का शिष्य हूँ, जिन्होंने सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण होते हुए भी एक चाण्डाल के पाखाने की सफाई लगातार कई दिनों तक की थी। सबका सेवक बनकर ही एक हिन्दू अपने को उन्नत करने की चेष्टा करता है।"

स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षा को व्यक्ति समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए आवश्यक माना। उन्होंने सभी समस्यों का निदान शिक्षा को ही बताया। शिक्षा के उद्देश्यों का विवेचन करते हुए कहते हैं कि "जो शिक्षा प्रणाली जनसाधारण को जीवन-संघर्ष से जूझने की क्षमता प्रदान करने में सहायक नहीं होती, जो मनुष्य के नैतिक बल का, उसकी सेवा-वृत्ति का उसमें सिंह के समान साहस का विकास नहीं करती यह भी क्या शिक्षा के नाम के योग्य है? स्वामी जी ने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बतायें-

AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR), 3.125 (IIFS) & 3.8(SJIF)
Vol (3), Issue (2), April-June 2026 ISSN: 3048-7951

- अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्त
- मानव निर्माण करना।
- शारीरिक पूर्णता
- चरित्र का निर्माण
- जीवन संघर्ष की तैयारी
- राष्ट्रीयता की भावना का विकास

स्वामी विवेकानन्द भाषा की शिक्षा के सन्दर्भ में अत्यधिक उदार थे। वे संस्कृत भाषा की शिक्षा पर अधिक जोर देते थे क्योंकि यही हमारे धर्म और संस्कृति की भाषा है। इसके साथ ही मातृभाषा की शिक्षा अत्यन्त आवश्यक मानते थे। विज्ञान एवं तकनीकी की उचित शिक्षा के लिए वे अंग्रेजी की भी शिक्षा महत्त्वपूर्ण मानते थे। आज वेदान्त और विज्ञान के समन्वय की आवश्यकता और अधिक है स्वामी जी का दर्शन मानव मात्र के कल्याण के लिए है। उन्होंने स्वयं कहा था-"हम मानव-निर्माण का धर्म चाहते है। इस मनुष्य का निर्माण करने वाले सिद्धान्त चाहते है और हम मानव निर्माण की सर्वांगीण शिक्षा चाहते हैं"

स्वामी विवेकानन्द जी श्रीराम कृष्ण परमहंस के शिष्य थे। श्री परमहंस ने इस सत्य की अनुभूति की थी कि परमात्मा आत्मा में है और आत्मा परमात्मा में है और उन्होंने इस सत्य की अनुभूति अपने शिय विवेकानन्द को भी कराई थी। इसके साथ-साथ श्री विवेकानन्द ने वेदों और उपनिषदों का गूढ़ अध्ययन किया था और उनके द्वारा प्रतिपादित सत्यों की जीवन में अनुभूति की थी।

स्वामी के विचार तार्किक ही नहीं वरन् अनुभव सिद्ध है

स्वामी विवेकानन्द ,द्वारा प्रतिपादित नव्य वेदान्त का शिक्षा व्यवस्था एवं सामाजिक सन्दर्भ में अनुशीलन करें तो हमारी शिक्षा प्रक्रिया में आमूल-चूल परिवर्तन दृष्टिगत होगा तथा सामाजिक क्रियाकलापों में नवीन परिवर्तन, मौलिकता, सौन्दर्यानुभूति एवं समरसता का भाव प्रदर्शित होगा। हम भारत के लोग पुनः विश्वगुरू की खोयी हुई प्रतिष्ठा एवं मर्यादा को प्राप्त कर सकेंगे तथा विश्व मंत्र पर पुनः अपना एक नया आयाम उच्च शिखर पर मंचासीन कर सकेगें। वास्तव में भारत को सोने की चिड़ियां के रूप में पुनः नवभारत का निर्माण कर सकेंगे अपनी खोई हुई पुरानी संस्कृति को वापस ला सकेंगे। जिसका समाधान नव्य वेदान्त का आधार बिन्दु ही होगा। भारतीय सुसंस्कृति मूल सभ्यता को पुनः जागृत कर सकेंगे। स्वामी जी के तीनों पक्षों यथार्थ प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक को महत्व देते थे, परन्तु सर्वाधिक महत्त्व आध्यात्मिक पक्ष को देते थे। विशाल मात्रा में भारतीय अशिक्षित नागरिकों को देखकर वह विचलित हो उठते थे और कहते थे। जब तक भारत के समस्त नर-नारी शिक्षित होते वे जीवन के किसी भी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकते। सहशिक्षा के विरोधी होते हुए भी वह नारियों को पुरूष के समान शिक्षा देने के पक्ष में थे। वे कहते थे- "पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो, तब वे तुमको बतायेंगी कि उनके लिए कौन सा सुधार आवश्यक है।"

इस प्रकार स्वामी जी के शैक्षिक चिन्तन में आध्यात्मिकता के साथ वैज्ञानिकता का समावेश मिलता है। मूल्य शिक्षा व सकारात्मक शिक्षा का प्रत्यय आज भी उतनी ही प्रांसगिक है जितना कि किसी भी समय था। मानव निर्माण हेतु वास्तविक शिक्षा का सार स्वामी जी के शैक्षिक चिन्तन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष: शोधपत्र का निष्कर्ष है कि स्वामी विवेकानन्द का नव्य वेदान्त आध्यात्मिकता और भौतिकता का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करता है। यह दर्शन आज भी मानवता, शिक्षा, सामाजिक समरसता, नैतिकता और आत्म-विकास के लिए अत्यन्त प्रासंगिक है। उनके विचार भारत को पुनः ज्ञान, संस्कृति और मानवीय मूल्यों के आधार पर सशक्त बनाने की प्रेरणा देते हैं।

सन्दर्भ सूची:

- स्वामी विवेकानन्द की सम्पूर्ण कृतियाँ 1991, मायावती मेमोरियल एडीशन वॉल्यूम-II, अद्धैत आश्रम, कलकत्ता, पृ0 15
- स्वामी विवेकानन्द की सम्पूर्ण रचनाएँ 1995, मायावती मेमोरियल एडीशन, वॉल्यूम-5 अद्धैत आश्रम, कलकत्ता।
- राम सकल पाण्डेय, 1995, भारत के महान शिक्षाशास्त्री, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
- राम सकल पाण्डेय, शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- डॉ0 एस0एस0 मिश्र 2011 स्वामी विवेकानन्द शिक्षादर्शन शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- अग्रवाल, एस0के0- शिक्षा के तत्कालीन सिद्धान्त पब्लिकेशन हाउस, मेरठ।
- पाठक पी0डी0- भारतीय शिक्षा का विकास
- स्वामी विवेकानन्द साहित्य- नवाँ संस्करण, अद्धैत आश्रम 5 डीही एण्टाली रोड कलकत्ता।
- स्वामी विवेकानन्द साहित्य- आठवाँ संस्करण, अद्धैत आश्रम
- श्रीमदभगवत गीता- गीता प्रेस, गोरखपुर।
- त्यागी गुरूशरण दास एवं नन्द विजय कुमार (2001)- उदीयमान भारत में शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- मानव चेतना, राजर्षि टण्डन ओपेन यूनिर्वसिटी, प्रयागराज।